IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, June 2023

हर्षकालीन शासन व्यवस्था (606 ई.–647 ई.): एक अध्ययन

डॉ. सोनू सारन
सहायक आचार्य
जगदीशप्रसाद झबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान

सारः हर्ष के समय की शासन व्यवस्था की संपूर्ण जानकारी बाणभट्ट द्वारा रचित हर्षचरित कादंबरी तथा चीनी यात्री हेनसांग के विवरण से प्राप्त होती है। हर्ष ने अपने साम्राज्य का प्रशासन गुप्त वंश के प्रशासन के ढर्रे पर ही किया था। हर्ष ने गुप्तकालिन शासन पद्धति मैं ही कुछ परिवर्तन कर अपनाया था राजा के अधीन कर्मचारियों अथवा मंत्रियों के नाम भी गुप्त काल के अनुसार ही थे। हर्ष तथा गुप्त वंश के प्रशासन में केवल इतना ही अंतर था कि हर्ष का प्रशासन अधिक सामांतिक और विकेंद्रित था।हर्ष का मुख्य उद्देश्य प्रजा को प्रसन्न और सुखी देखना था। कादंबरी तथा हर्षचरित में भी हर्ष को प्रजा रक्षक कहा गया है।

शब्द संकेतः महासम्मेलन, भुक्ति, महासंधिविग्राहिक, महाबलाधिकृत,रणभांडागराधीकरण

संदर्भः–

1. अग्रवाल, वा. श., कादम्बरी एक सांस्कृतिक अध्ययन, वाराणासी, 1958
2. चटर्जी, गौरीशंकर., हर्षवर्द्धन, हिन्दी, द्वितीय संस्करण इलाहाबाद, 1950
3. मिश्र, जयशंकर ,प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास ,प्रथम संस्करण, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
4. मुखर्जी. आर. के., हर्ष लन्दन, 1906
5. थापर रोमिला, भारत का इतिहास, नई दिल्ली, प्रथम हिन्दी संस्करण, 1975
6. त्रपाठी आर. एस. हिस्ट्री ऑफ कन्नौज बनारस 1937
7. बाणभट्ट, कादम्बरी,सम्पा., पुर्व मुम्बई ,1896
8. पाण्डे गोविन्दचन्द्र, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास उतर प्रदेश संस्थान लखनऊ, 1999